

डॉ.भीमराव अम्बेडकर की दृष्टि में अष्टांगिक मार्ग : एक अध्ययन

चम्पालाल मंद्रेले (शोधार्थी)

स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज एण्ड सिविलाईलेजेशन

गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय

ग्रेटर नोएडा, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने शाक्यमुनि गौतम बुद्ध की दुःख मुक्त और सुखी होने की शिक्षाओं को अपने जीवन में अपनाया और दूसरों को उस पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में धम्म-दीक्षा में 22 प्रतिज्ञाएँ अपने अनुयायियों को दी थीं। उन 22 प्रतिज्ञाओं में ग्यारहवीं प्रतिज्ञा में अष्टांगिक मार्ग का पालन करने की प्रतिज्ञा दी है। इससे स्पष्ट होता है कि उनके इस मार्ग को वे सुख और प्रगति का मार्ग मानते थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को इसे जीवन में उतारने के लिए प्रेरित किया। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

डॉ.भीमराव आंबेडकर द्वारा रचित पुस्तक 'बुद्ध और उनका धम्म' में उनकी दृष्टि से अष्टांगिक मार्ग इस प्रकार हैं। उन्होंने इस ग्रन्थ में आर्य शब्द का प्रयोग किया गया है, जो महत्वपूर्ण तथ्य है। इसीलिए मैंने उस शब्द का उपयोग नहीं किया है। जिससे सभी को उनका स्पष्ट दृष्टिकोण पता चल सके। आधुनिक विश्व के लिए अष्टांगिक मार्ग की शिक्षा बहुत ही प्रासंगिक और उपयोगी है। क्योंकि आज भी लोग मिथ्या धरणा, कर्मकाण्ड, अशिक्षा, अज्ञानता, गरीबी, मादक पदार्थ का सेवन, बुराई पर आधरित जीवन और एकाग्रता का अभाव इत्यादि से ग्रस्त हैं। इस पर अष्टांगिक मार्ग औषध और कल्याणकारी उपाय है। इसकी देसना सर्वप्रथम शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने सारनाथ के इसिपतन मृगदाय वन में पंचवग्निय को दी थी। जिसे 'धम्मचक्क पवत्तन' के नाम से जाना जाता है। इसमें अष्टांगिक मार्ग या सम्यक् मार्ग बताया गया है। यही सुखी होने का और निर्वाण प्राप्त करने का

मार्ग है। इसके आठ अंग हैं। इसे तीन भागों में बाँटा गया है : प्रज्ञा, शील और समाधि। प्रज्ञा के अन्तर्गत सम्यक् दृष्टि और सम्यक् संकल्प को शामिल किया गया है। शील के अन्तर्गत सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्मान्त और सम्यक् आजीविका को शामिल किया गया है और समाधि के अन्तर्गत सम्यक् व्यायाम, सम्यक् सति और सम्यक् समाधि को शामिल किया गया है। आठ अंग इस प्रकार हैं :

1 सम्यक् दृष्टि, 2 सम्यक् संकल्प, 3 सम्यक् वाणी, 4 सम्यक् कर्मान्त, 5 सम्यक् आजीविका, 6 सम्यक् व्यायाम, 7 सम्यक् स्मृति और 8 सम्यक् समाधि।¹

अष्टांगिक मार्ग को पालि भाषा में इस प्रकार उल्लेखित किया है :

अट्ठङ्गिको अरियपथो जनानं, मोक्खप्पवेसो उज्जुकोव 'मग्गो'

धम्मो अयं सन्तिकरो पणितो, निबयानिको तं पणमामि धम्मम।²

अर्थात् अष्टांगिक मार्ग सभी लोक में श्रेष्ठ है। मुक्ति की ओर लेकर जाने वाला मार्ग है। यह सरल मार्ग है। यह धम्म, शान्ति देने वाला है, प्रणित है और निर्वाण की ओर लेकर जाने वाला मार्ग है, ऐसे धम्म को मैं प्रणाम करता हूँ।

उजुको नाम सो मग्गो अभया नाम सा दिसा।

रथो अकज्जानो नाम धम्मचक्केहि संयुतो।।

अर्थात् यह मार्ग बहुत सरल है। वह स्थान भय से शून्य है। कुछ भी आवाज न करने वाला रथ है। जिसको धम्म चक्र लगा है। अष्टांगिक मार्ग में प्रथम अंग सम्यक् दृष्टि है। जो इस प्रकार है: सम्यक् दृष्टि अष्टांगिक मार्ग का प्रथम अंग है। यह एक महत्वपूर्ण अंग है। प्रथम अंग को प्रजा का भाग माना गया है। इसका मतलब होता है। सही समझ और सही जानना। आदमी कर्मकाण्ड के कार्य को व्यर्थ समझना और शास्त्रों की मिथ्या धरणाओं और विश्वास से मुक्त हो।³ ऐसा कभी नहीं होता है कि जो घटना घटती है, वह प्रकृति के नियमों के विरुद्ध घटित होती है। जो कल्पना पर आधारित मिथ्या धरणाएँ हैं, उसे न मानना, क्योंकि यह वास्तविक नहीं है। इसमें मन को पूरी स्वतंत्रता होती है। मन स्वतंत्र है तो सब स्वतंत्र है। इसके साथ-साथ विचार भी स्वतंत्र होना चाहिए। मनुष्य का मन प्रमुख है। यह सबका कर्ता-धर्ता है। जैसा मनुष्य का मन विचार करता है, वैसा ही कार्य घटित होता है। अच्छे मन से किया गया कार्य सुखदायी होता है। मलिन मन से किया गया कार्य दुःखदायी होता है।

अविद्या मनुष्य के दुःख का कारण है। यदि आदमी अविद्या का विनाश कर दे, तो वह दुःख मुक्त हो जाता है। सम्यक् दृष्टि अर्थात् अंधविश्वास से मुक्ति। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के विचार पालि भाषा में इस प्रकार वर्णित हैं :

दिट्ठि विसकानी उपान्तिवतो पन्तो नियाम पटिलद्धमग्गो।

अप्पन्नणोमिह अन नेबये।।

अर्थात् मैं मिथ्या दृष्टि के उस पार हूँ। सम्यक् मार्ग पर चलकर ही उद्देश्य प्राप्त किया है। दूसरों के बिना ज्ञान प्राप्त किया है।

अष्टांगिक मार्ग का दूसरा अंग सम्यक् संकल्प है। यह अंग प्रजा के अन्तर्गत आता है। इसका मतलब है, मनुष्य की आशाएँ, आकांक्षायें, ऊंचे स्तर की और योग्य हों, निम्नस्तर की और अयोग्य नहीं होना चाहिए।⁴ मनुष्य को ऐसे ही विचार रखना चाहिए जो स्वयं के लिए और दूसरों के लिए भी योग्य हो, जिससे मनुष्य का जीवन स्तर अच्छा हो जाता है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध कहते हैं कि :

असारे सारमतिनो सारे चासारदस्सिनो।

ते सारं नाधिगच्छन्ति मिच्छासंकप्प गोचरा।।⁵

अर्थात् असार (वस्तु) को सार और सार (वस्तु) को असार समझने वाले, मिथ्या संकल्पों में संलग्न मनुष्य सार (वस्तु) को नहीं प्राप्त करते। सार च सारतो त्वा असार च असारतो।

ते सारं अधिगच्छन्ति सम्मासंकप्पगोचरा।।⁶

अर्थात् जो सार को सार (योग्य) व असार को (अयोग्य) असार समझने वाले, सच्चे संकल्पों में संलग्न मनुष्य सार (वस्तु) को प्राप्त करते हैं।

जीवन में अति उच्च उद्देश्य प्राप्ति और कार्य के लिए सम्यक् संकल्प अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है। सम्यक् जो बुद्धिमान तथा उत्साहपूर्ण व्यक्तियों के योग्य होता है।⁷ ब्राह्मणी धर्म और अन्य धर्म में उद्देश्य प्राप्ति के लिए देव, ईश्वर की आराधना करने का संकल्प करते हैं, परन्तु उन्होंने बताया कि निर्वाण पद के लिए चित्त को संयम मार्ग पर लगाना होता है। निर्वाण पद यह जीवन की अत्यन्त श्रेष्ठ अवस्था है। निर्वाण से बढ़कर

सुखद कुछ नहीं है।⁸ सम्पूर्ण समस्या का मूल तृष्णा है। तृष्णा के पीछे प्राणी दौड़ता रहता है। रागाग्नि, द्वेषाग्नि व मोहाग्नि में वह फँसा रहता है। इससे मुक्त होने के लिए सम्यक् संकल्प महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जीवन में जो कोई उद्देश्य, आकांक्षा प्राप्त करने के लिए सम्यक् संकल्प अनिवार्य है। संकल्प अनेक प्रकार के होते हैं, परन्तु उन्होंने सम्यक् संकल्प को ही प्रधानता दी है। मिथ्या संकल्प के स्थान पर सम्यक् संकल्प को प्रस्थापित करने का महत्व है। मन यह सभी अच्छे और बुरे विचारों का मूल है। इसीलिए मन के विचार योग्य दिशा में ले जाने की दृष्टि से सम्यक् संकल्प महत्वपूर्ण अंग है। सम्यक् संकल्प त्रिसरण, पंचशील का अनुसरण करना है। आर्य अष्टांगिक मार्ग और दस पारमिताओं को जीवन में उतारने के लिए सम्यक् संकल्प अत्यन्त आवश्यक है।

अष्टांगिक मार्ग का तीसरा अंग सम्यक् वाचा है, जो अग्रलिखित है। यह शील के अन्तर्गत आता है। इसका मतलब होता है आदमी को सभी के साथ विनम्र वाणी और शिष्टाचार का प्रयोग करना चाहिए। आदमी को सत्य वचन बोलना चाहिए। असत्य नहीं बोलना चाहिए। दूसरों की बुराई नहीं करना चाहिए। दूसरों के बारे में झूठी बात न फैलाये। दूसरों को गाली नहीं देना चाहिए। कठोर वचन नहीं बोलना चाहिए। व्यर्थ की बात नहीं करना चाहिए। वाणी तार्किक और मूल्यवान होना चाहिए।⁹ वाणी पक्षपात रहित होना चाहिए। सत्य के साथ होना चाहिए। इसमें व्यक्तिगत लाभ नहीं देखा जाता है। व्यक्ति बड़ा हो चाहे छोटा उसके साथ सम्यक् वाणी का ही प्रयोग करना चाहिए। सम्यक् वचन अर्थात् दयापूर्ण, स्पष्ट तथा सत्य भाषण। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध कहते हैं कि-

यथापि रुचिरं पुष्पफं वण्णवन्तं अगन्धकम।

एवं सुभासिता वाचा अपफला होति अकुब्बतो।¹⁰
अर्थात् जैसे कोई सुन्दर व रंगयुक्त फूल गन्ध रहित होता है, उसी प्रकार कथनानुसार कार्य न करने वाले की सुभाषित वाणी निष्फल हो जाती है।

यथापि रुचिरं पुष्पफं वण्णवन्तं सगन्धकम।

एवं सुभासित वाचा सफला होति सकुब्बतो।¹¹
अर्थात् जैसे कोई सुन्दर व रंगीन फूल सुगन्ध युक्त होता है, उसी प्रकार कथनानुसार कार्य करने वाले की सुभाषित वाणी सफल होती है। सत्य वचन औषध की तरह है, जो आदमी को स्वस्थ जीवन जीने के लिए सहायता प्रदान करता है।

अष्टांगिक मार्ग का चौथा अंग सम्यक् कर्मान्त है। इसे शील के अन्तर्गत रखा गया है। इसका मतलब होता है, जब किसी आदमी के कार्य इन नियमों से समन्वय रखता हो, उसे सम्यक् कर्मान्त कहा जा सकता है।¹² मन, काया और वाचा से आदमी कार्य करता है। तीनों के द्वारा किया गया कार्य कुशल होना चाहिए। आदमी जो भी कार्य करता है, उस कार्य का ध्यान अपने साथ-साथ दूसरों की भावना का रखना चाहिए। आदमी के द्वारा किया गया कार्य अपने लिए और दूसरों के लिए भी सुखदायी हो। शान्तिपूर्ण, ईमानदारी तथा शुद्ध आचरण¹³ को सम्यक् कर्म के मूलभूत तत्व कहा जा सकता है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध कहते हैं कि :

उद्धानवतो सतिमतो सुचिकम्मस्स निसम्मकारिनो।
स तस्स च धम्मजीविनो अप्पमत्तस्स
यसोभिड्ढति।

उद्धानेनप्पमादेन स मेन दमेन च।

दीपं कयिराथ मेधवी यं ओघो नाभिकीरति।¹⁴

अर्थात् जो उद्योगी, स्मृतिमान (जागरूक) पवित्र-कर्म करने वाले, सोच-समझ कर काम करने वाले, धर्मानुसार जीवन व्यापन करने वाले, अप्रमादी (बुरे आचरण न करने वाला), उसके यश में अभिवृद्धि होती है। मेधवी मनुष्य उद्योग, अप्रमाद से संयम, इन्द्रियसंयम से स्वयं ऐसा एक द्वीप बनाये कि उसे तृष्णारूपी बाढ़ डुबा न सके। सम्यक् कर्म करते हुए ही मनुष्य सुख और शान्ति की परम अवस्था तक पहुँच सकते हैं।

अष्टांगिक मार्ग का पाँचवा अंग सम्यक् आजीविका है, जो शील के अन्तर्गत समाहित किया गया है। इसका मतलब होता है प्रत्येक मनुष्य को अपनी जीविका के संचालन हेतु कमाई करनी पड़ती है। आदमी के द्वारा कमाई गयी जीविका जिससे किसी को भी हानि न हो उसे सम्यक् आजीविका कहा जाता है।¹⁵ आजीविका अलग-अलग रूप में होती है। कुछ अच्छी होती और कुछ बुरी होती है। बुरी का अर्थ है जिससे हानि होती है। आदमी किसी को हानि पहुँचाये और बिना किसी के साथ अन्याय किये अपनी जीविका कमा सकता है। किसी भी जीवधारी को किसी भी प्रकार क्षति या चोट न पहुँचाना¹⁶ ही सम्यक् आजीविका है। पंचशील का पालन करना यही सम्यक् आजीविका है। 1 प्राणी हिंसा न करना, 2 चोरी न करना, 3 झूठ न बोलना, 4 मिथ्या व्यवहार न करना, 5 मादक पदार्थ का सेवन न करना सम्यक् आजीविका है। यह उपासक की नित्य आजीविका है। वैसे ही प्रत्येक पौर्णिमा, अमावस्या, चतुर्थी और पंचमी के दिन अष्टांग उपोसथ का पालन करना, 1 प्राणी हिंसा न करना, 2 चोरी न करना, 3 ब्रह्मचर्य का पालन करना, 4 झूठ न बोलना, 5 मद्यपान न करना, 6 विकाल भोजन न करना, 7 माला गन्ध धारण न करना व सुगन्धित द्रव्य न लगाना, 8

साधारण खटिया पर या जमीन पर कुछ बिछाकर आराम करना, यह आजीविका महिने में चार बार धारण करनी पड़ती है। इसी के आधार पर जीवन यापन करना होता है। भिक्षु और भिक्षुणीयों के लिए विनय का जीवन जीना उसकी आजीविका है। भिक्षुओं को 227 विनय का पालन करना होता है और भिक्षुणीयों को 311 विनय का पालन करना होता है।

अष्टांगिक मार्ग का छठा अंग सम्यक् व्यायाम है। इस अंग को समाधि के अन्तर्गत रखा गया है। जिसका मतलब होता है चित्त प्रवृत्तियों को जानकर अकुशल न करना और कुशल करना है। अविद्या को नष्ट करने का प्रयास प्रथम सीढ़ी है।

सम्यक् व्यायाम के चार उद्देश्य हैं¹⁷ : 1 यह एक आर्य अष्टांगिक मार्ग विरोधी चित्त-प्रवृत्तियों की उत्पत्ति को रोकना है। 2 ऐसी चित्त-प्रवृत्तियों को दबाना जो उत्पन्न हो गयी हो। 3 ऐसी चित्त-प्रवृत्तियों को उत्पन्न करना जो अष्टांगिक मार्ग की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक हो। 4 ऐसी उत्पन्न चित्त-प्रवृत्तियों में और भी अधिक वृद्धि करना और उनका विकास करना है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध कहते हैं कि :

यथागारं दुच्छन्नं वुट्ठी समतिविज्झति।

एवं अभावितं चित्तं रागो समतिविज्झति॥

यथागारं सुच्छन्नं वुट्ठी न समतिविज्झति।

एवं सुभावितं चित्तं रागो न समतिविज्झति॥¹⁸

अर्थात् यदि घर की छत ठीक न हो, तो जिस प्रकार उसमें वर्षा का प्रवेश हो जाता है, उसी प्रकार यदि संयम का अभ्यास न हो, तो मन में राग प्रविष्ट हो जाता है। यदि घर की छत ठीक हो, तो जिस प्रकार उसमें वर्षा का प्रवेश नहीं होता, उसी प्रकार यदि संयम का अभ्यास हो, तो मन में राग प्रविष्ट नहीं होता। सम्यक् व्यायाम

यह मन का व्यायाम है, जो अच्छी और बुरी चीजों को जान पाता है।

अष्टांगिक मार्ग का सातवाँ अंग सम्यक् सति या स्मृति है। इस अंग को भी समाधि अन्तर्गत शामिल किया गया है। इसका मतलब मन की सदैव जागरूकता से है। प्रत्येक बात पर ध्यान देना। मन में जो उत्पन्न अकुशल विचार है, उनकी पहरेदारी करना ही सम्यक् स्मृति का ही दूसरा नाम है। इसे प्राप्त करने के लिए पाँच बाधाएँ आती हैं। 1 लोभ 2 द्वेष 3 आलस्य 4 विचिकित्सा 5 अनिश्चय।¹⁹ इन बाँधों को तोड़ना आवश्यक है। जिससे समाधि के मार्ग तक पहुँचने में सरलता होती है। यदि सरल भाषा में कहा जाए तो एक सक्रिय तथा जागरूक मस्तिष्क है। इसके सम्बन्ध में संयुक्त निकाय में कहा गया है। कि -

सतिपट्ठान कुसला बोज्झङ्गभावना रता।

विपस्सका धम्मधरा धम्म नगरे वसन्ति ते।।

अर्थात् स्मृति प्रस्थान में कुशल, बौद्ध यंग भावना में रत, विपश्यक (विशेष रीति से देखने वाला), धम्मध वह धम्म नगर में रहता है।

सम्बोद्धिोपि विदन्ति धम्मं निब्बानपत्तिया।

ये सतिं पच्चलदंठसु सम्मा ते सुसमाहिता।।

थेरगाथा में कहा गया है, “जो विचार को जानकर स्मृतिमान रहता है, वह विचार में आसक्त नहीं होता है। वह अनासक्त चित्त होकर अनुभव प्राप्त करता है, उसमें रुकते नहीं।”

अत्तदीपा ततो होथ, सतिपट्ठानगोचरा

भावेत्वा सत्तबोज्झङ्गण्णे, दुक्खस्सन्त करिस्सथ।।

अर्थात् स्मृति प्रस्थान के गोचर भूमि में रमण करते हुए अपना द्वीप स्वयं बनाओ। तुम सात बोध्यांग की भावना कर दुःख का अन्त करो।

सम्यक् सति में आदमी का मन सदैव जागरूक हो जाता है। जागरूक मन से ही कुशल ही कुशल

होता है। मनुष्य की होने वाली क्रिया जागरूक रूप में और सक्रियता के तौर पर ही होती है।

अष्टांगिक मार्ग का अन्तिम और आठवाँ अंग सम्यक् समाधि है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। यह भी समाधि का अन्तिम अंग है। इसका मतलब होता है चित्त की एकाग्रता।²⁰ ध्यान को प्राप्त किया जा सकता है। पाँच संयोजन या बंधन स्थगित रहते हैं। ध्यान की अवस्था अस्थायी है। इसीलिए संयोजन और बन्धन भी अस्थायी ही स्थगित रहते हैं। चित्त में ही स्थायी परिवर्तन चाहिए। ये स्थायी परिवर्तन सम्यक् समाधि से ही सम्भव होता है। यह एक भावात्मक वस्तु है। यह मन को कुशल कर्मों की एकाग्रता के साथ चिन्तन करने का आदत डालती है। मन में उत्पन्न अकुशल कर्मों की प्रवृत्ति को ही समाप्त कर देती है। यह मन को सदैव कुशल ही कुशल करने की और सोचने की आदत डाल देती है। यह मन को अपेक्षित शक्ति प्रदान कर देता है। जिससे मनुष्य का कल्याण ही कल्याण होता है। यह सुख, शान्ति और पूर्ण एकाग्रता के लिए बहुत ही सहायक होती है। सम्यक् समाधि अर्थात् जीवन के गंभीर रहस्यों के सम्बन्ध में गंभीर विचार है।²¹ शाक्यमुनि गौतम बुद्ध कहते हैं कि -

समाधितनमालस्स कुवितक्का न जायरे।

न च विक्खिपते चित्तं एवं तुम्हे पिलन्धथ।।

अर्थात् जिसने अपने मुकुट में समाधि रत्न को धरण किया है, उसको कुवितर्क कष्ट नहीं दे सकता। उसका चित्त कभी चंचल नहीं होता है।

यं बुद्ध सेट्ठो परिवण्णयी सुचि, समाधिनन्तरिकमाहु।

समाधिना तेन समो न विज्जति, इदम्पि धम्मं रतन पणीतं।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु।।²²



अर्थात् जिस शुद्ध समाधि की बुद्ध ने प्रशंसा की व जिसे तुरन्त ही फल देने वाली कहते हैं, उस समाधि के समान दूसरा कुछ श्रेष्ठ नहीं है। यह भी धर्म में उत्तम रत्न है। इस सत्य वचन से कल्याण हो।

निष्कर्ष

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अष्टांगिक मार्ग को शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा उपदेशित धम्म बताया है। उन्होंने बताया कि यह मानव कल्याणकारी देशना है। परन्तु उन्होंने आर्य शब्द का प्रयोग नहीं किया प्रतीत होता है केवल अष्टांगिक मार्ग ही लिखा है। जो उनका एक नूतन दृष्टिकोण प्रतीत होता है। इसीलिए उन्होंने अष्टांगिक मार्ग का वर्णन 'बुद्ध और उसका धम्म' ग्रन्थ में किया है और जब उन्होंने सन् 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में धम्म-दीक्षा के समारोह में अष्टांगिक मार्ग के पालन करने की प्रतिज्ञा ली थी और उपस्थित जन समुदाय को प्रतिज्ञा दी थी। उन्होंने कई स्थानों पर इस सम्बन्ध में अपने भाषण भी प्रस्तुत किये। इसको वे सम्यक् मार्ग भी कहते हैं। यह एक श्रेष्ठ मानव जीवन पद्धति है जो मानव के कल्याण और सुख व शान्ति के लिए उत्तम मार्ग है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- 1 अम्बेडकर भीममराव, कौसल्यायन, (आनन्द), शुद्धिकरण-विजयमानकर, बुद्ध और उसका धम्म, ब्ल्यू वर्ल्ड सिरीज, नागपुर, 2015 पृष्ठ 97
- 2 गोयनका सत्यनारायण, धम्म-वंदना, विपश्यना विशोधन विन्यास धम्मगिरी, इगतपुरी, 2012 पृष्ठ 8
- 3 अम्बेडकर भीममराव, कौसल्यायन, (आनन्द), शुद्धिकरण-विजयमानकर, बुद्ध और उसका धम्म, ब्ल्यू वर्ल्ड सिरीज, नागपुर, 2015, पृष्ठ 95
- 4 अम्बेडकर भीममराव, कौसल्यायन (आनन्द), शुद्धिकरण-विजयमानकर, बुद्ध और उसका धम्म, ब्ल्यू वर्ल्ड सिरी, नागपुर, 2015, पृष्ठ 96

- 5 कौसल्यायन, आनन्द, धम्मपद, बुद्ध भूमि प्रकाशन, नागपुर, 1993, पृष्ठ 3
- 6 वही, पृष्ठ 2
- 7 भीमराव अम्बेडकर, क्रान्ति तथा प्रति क्रान्ति बुद्ध अथवा कार्ल मार्क्स, सम्पूर्ण वाडमय खण्ड-7, डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ 351
- 8 अम्बेडकर भीममराव, कौसल्यायन (आनन्द), शुद्धिकरण-विजयमानकर, बुद्ध और उसका धम्म, ब्ल्यू वर्ल्ड सिरीज, नागपुर, 2015, पृष्ठ 177
- 9 वही, पृष्ठ 96
- 10 कौसल्यायन, आनन्द, धम्मपद, बुद्ध भूमि प्रकाश, नागपुर, 1993, पृष्ठ 13
- 11 वही
- 12 अम्बेडकर भीममराव, कौसल्यायन, (आनन्द), शुद्धिकरण-विजयमानकर, बुद्ध और उसका धम्म ब्ल्यू वर्ल्ड सिरीज, नागपुर, 2015 पृष्ठ 96
- 13 भीमराव अम्बेडकर, क्रान्ति तथा प्रति क्रान्ति बुद्ध अथवा कार्ल मार्क्स सम्पूर्ण वाडमय खण्ड-7, डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ 351
- 14 कौसल्यायन, आनन्द, धम्मपद, बुद्ध भूमि प्रकाशन, नागपुर, 1993, पृष्ठ 6, 7
- 15 अम्बेडकर भीममराव, कौसल्यायन (आनन्द) शुद्धिकरण-विजयमानकर, बुद्ध और उसका धम्म, ब्ल्यू वर्ल्ड सिरीज, नागपुर, 2015, पृष्ठ 96
- 16 भीमराव अम्बेडकर, क्रान्ति तथा प्रति क्रान्ति बुद्ध अथवा कार्ल मार्क्स सम्पूर्ण वाडमय खण्ड-7, डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ 352
- 18 अम्बेडकर भीममराव, कौसल्यायन, (आनन्द), शुद्धिकरण-विजयमानकर, बुद्ध और उसका धम्म ब्ल्यू वर्ल्ड सिरीज, नागपुर, 2015 पृष्ठ 96
- 19 कौसल्यायन, आनन्द धम्मपद, बुद्ध भूमि प्रकाशन, नागपुर, 1993 पृष्ठ 3, 4



20 अम्बेडकर भीमराव, कौसल्यायन, (आनन्द)

शुद्धिकरण-विजयमानकरण, बुद्ध और उसका धम्म,
ब्ल्यू वर्ल्ड सिरीज, नागपुर, 2015 पृष्ठ 97

21 वही

22 भीमराव अम्बेडकर, क्रान्ति तथा प्रति क्रान्ति बुद्ध
अथवा कार्ल मार्क्स सम्पूर्ण वाडमय खण्ड-7 डॉ.
अम्बेडकर प्रतिष्ठान, सामाजिक न्याय और
अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली,
2013, पृष्ठ 352

24 धर्मरक्षित, सुत्तनिपात, (मूलपालि और हिन्दी
अनुवाद), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2014, पृष्ठ
56